सन्धि

निः +तार = निस्तार	निः+दुर = निष्ठुर
दुः +तर = दुस्तर	निः +तेज = निस्तेज
निः +छल = निश्छल	निः +चिन्त = निश्चिन्त

निः +अर्थक = निरर्थक	पुनः +जन्म = पुनर्जन्म
वहि + मुख = बहिर्मुख	

दुः +उपयोग = दुरुपयोग	निः +मल = निर्मल
निः +उपमा = निरुपमा	निः +विघ्न = निर्विघ्न
दुः +बल = दुर्बल	दुः +आशा = दुराशा
निः +धन = निर्धन	निः +आहार = निराहार
निः +उत्साह = निरुत्साह	निः +गुण = निर्गुण
निः +यात = निर्यात	निः +आमिष = निरामिष

मनः +अनुकूल = मनोनुकूल	मनः +विज्ञान = मनोविज्ञान
रजः +गुण = रजोगुण	मनः +कामना = मनोकामना
मनः +विकार = मनोविकार	तपः +बल = तपोबल
पयः +द = पयोद	

अलंकार

अनुप्रास

परिभाषा – जिस रचना में व्यंजनों की बार–बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

'छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की।'

संसार की समरस्थली में धीरता धारण करो। ('स' और 'घ' वर्णों की आवृत्ति)

विमल वाणी ने वीणा ली कमल कोमल कर में सप्रीत ('व' और 'क' वर्ण की आवृत्ति)

पूत सपूत तो का धन संचय।
पूत कपूत तो का धन संचय।।

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

✓ बीती विभावरी जाग री अम्बर–पनघट में डूबो रही
तारा घट उषा–नागरी।। –रुपक
✓ फूले कास सकल महि छाई।
जनु बरसा रितु प्रकट बुढ़ाई।। –उत्प्रेक्षा
✓ या मुरलीधर की अधरान–धरी अधरान धरौंगी। –यमक
✓ मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों" –रुपक
✓ "कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि।
कहत लखन सन राम ह्रदय गुनि।।" –अनुप्रास
✓ रुद्रन को हँसना ही तो गान –विरोधाभास

यमक

माला फेरत जुग भया, फिरा न मनका फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मन का फेर।।

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

✓ उस तपस्वी से लम्बे थे, देवदार दो चार खड़े। –प्रतीप
✓ "उदित उदय गिरि मंच पर, रघुवर बाल पतंग।
विकसे संत सरोज सब, हरषे लोचन भृंग।।" –रुपक
✓ खग कुल–कुल–कुल सा बोल रहा है –यमक
✓ मेरो मन अनंत कहाँ सुख पावै, जैसे उड़ि जहाज कै पंक्षी
फिरि जहाज पै आवै –उपमा

श्लेष

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

✓ अम्बर–पनघट में डूबो रही तारा–घट ऊषा–नागरी – रुपक
✓ या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों–ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों–त्यों उज्ज्वल होय।।
– विरोधाभास
✓ रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुस चून।। –श्लेष
✓ पीपर पात सरिस मन डोला। – उपमा
✓ चरण कमल बंदौ हरिराई –रुपक
✓ बाण नहीं पहुँचे शरीर तक शत्रु गिरे पहले भू पर
– अतिशयोक्ति

वीप्सा

✓ हा!हा!! इन्हें रोकन को टोक न लगावौ तुम।

उपमा

✓ 'मखमल के झूल पड़े, हाथी–सा टीला'।

✓ हरिपद कोमल कमल–से।

✓ हाय, फूल–सी कोमल बच्ची,
हुई राख की थी ढेरी।

✓ मुख बाल–रवि–सम लाल होकर,
ज्वाल–सा बोधित हुआ।

रुपक

✓ सिरझूका तूने नियति की मान ली यह बात।
स्वयं ही मुर्झा गया तेरा ह्रदय–जलजात।।

✓ शशि–मुख पर घूँघट डाले
अंचल में दीप छिपाए।

✓ 'अपलक नभ नील नयन विशाल'

✓ मैया मैं तो चन्द्र–खिलौना लैहों।

✓ पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

उत्प्रेक्षा

✓ उसकाल मारे क्रोध के
तनु काँपने उसका लगा।
मानो हवा के जोर से
सोता हुआ सागर जगा।।

✓ कहती हुई यों उत्तरा के,
नेत्र जल से भर गए।

हिम के कणों से पूर्ण मानो,
हो गए पंकज नए।।

✓ मुख बाल रवि सम लाल होकर,
ज्वाल–सा बोधित हुआ।

अतिशयोक्ति

✓ भूप सहस दस एकहिं बारा।
लगे उठावन टरत न टारा।।

✓ बालों को खोलकर मत चला करो दिन में
रास्ता भूल जाएगा सूरज!

✓ आगे नदियाँ पड़ी अपार,
घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार,
तब तक चेतक था उस पार।।

✓ हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।।

✓ वह शर इधर गांडीव गुण से
भिन्न जैसे ही हुआ।
धड़ से जयद्रथ का इधर सिर
छिन्न वैसे ही हुआ।।

अन्योक्ति

✓ नहिं पराग नहिं मधुर मधु,
नहिं विकास इहिं काल।
अली कली ही सों बँध्यो,
आगे कौन हवाल।।

✓ वे न इहाँ नागर बड़े दिन आदर तौ आब।
फूलौ अनफूलौ भयो, गँवई गाँव गुलाब।

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

✓ दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परत गाँठि दुरजन हिये, दई नई यह रीति।

संदेह

✓ सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है,
कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही की सारी है?

✓ यह मुख है या चन्द्र है।

भ्रांतिमान

✓ वृन्दावन विहरत फिरै राधा नन्दकिशोर।
नीरद यामिनी जानि सँग डोलैं बोलैं मोर।।

✓ नाक का मोती अधर की क्रांति से
बीज दाड़िम का समझ कर भ्रांति से
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है
सोचता है अन्य शुक यह कौन है?

विभावना

✓ बिनु पद चले सुने बिनु काना।
कर बिनु करम करे विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बाणी वकता, बड़ जोगी।।

✓ दुख इस मानव आत्मा का रे नित का मधुमय भोजन।
दुख के तम को खा–खाकर, भरती प्रकाश से वह मन।।
सुमित्रानंदन पंत

EduBull.com